माथापच्ची

• दो पहेलियाँ

बिना सड़क के चलते हैं
बहुत कड़क के चलते हैं
रुई के गुच्छे बड़े-बड़े
जिनमें रक्खे कई घड़े

सिर पे कोई तम्बू है
बालों की छतरी है
पैराशूट से जूँ कोई
मुँडी पे उतरी है

अक्लू के दो तर्क

• दस फीसदी सड़क दुर्घटनाएँ नशे में वाहन चलाने की वजह से होती हैं।
यानी नब्बे फीसदी दुर्घटनाएँ बिना नशा किए वाहन चलाने से होती हैं।

• दरवाज़ा आधा बन्द है
यानी दरवाज़ा आधा खुला है।
दरवाज़ा पूरा बन्द है
यानी दरवाज़ा पूरा खुला है।

• एक बार कुछ बिल्लियों को
मिल गईं कुछ चटाइयाँ।
परन्तु यदि हर चटाई पर
बैठी हो एक बिल्ली
तो एक बिल्ली को नहीं
मिलती है चटाई।
और अगर हर चटाई पर
बैठी हों दो बिल्लियाँ
तो एक चटाई रह जाती है खाली।
सोचो समझो और बताओ
कितनी बिल्लियाँ थीं और कितनी चटाइयाँ?

पहेलियों के उत्तर
बादल, टोप

चित्रः जितेन्द्र ठाकुर

• क्या तुम पाँच बार 3 का इस्तेमाल करके 10 ला सकते हो?
इसका हल हैः 33/3 - 3/3 = 10
मज़े की बात है किन्हीं भी पाँच एक जैसे अंकों के इस्तेमाल से 10 पाने के लिए यह तरीका कारगर है। आज़मा कर देखो।

• सेना के अफसर ने सिपाहियों को हुक्म दिया– दाएँ मुड़, बाएँ मुड़। फिर बाएँ मुड़, बाएँ मुड़। दाएँ मुड़। एक सिपाही सिर्फ एक बार बाईं तरफ मुड़ा। क्या उसका मुँह उसी तरफ होगा जहाँ बाकी सिपाहियों का है?

• एक प्रोफेसर को एक चौकोर क्षेत्र में डायनासोर के 7 अण्डे मिले। वो केवल तीन सीधे तारों की बागड़ लगाकर सातों अण्डों को अलग-अलग करना चाहते हैं। क्या तुम उनकी मदद कर सकते हो?

• लुईस कैरोल

दो घड़ियाँ

अगर मैं पूछूँ कि कौन-सी घड़ी बेहतर है, जो साल में एक बार सही समय बताती है या फिर जो एक दिन में दो बार सही समय बताती है।
तुम्हारा जवाब होगा – बाद वाली घड़ी।
बिलकुल ठीक!

मेरे पास दो घड़ियाँ हैं। एक तो बन्द है और दूसरी हर दिन एक मिनट पीछे हो जाती है। तुम कौन-सी लेना चाहोगे? बेशक, तुम्हारा जवाब होगा एक मिनट पीछे होने वाली। पर, ज़रा हर दिन एक मिनट पीछे होने वाली घड़ी के बारे में सोचो। एक-एक मिनिट करके जब वह 12 घण्टे पीछे हो जाएगी तब ही वह एक बार सही समय बताएगी। हिसाब लगाओ बारह घण्टे पीछे होने में उसे कितने दिन लगेंगे?

इस तरह वो दो सालों में केवल एक बार सही समय बताएगी। जबकि दूसरी घड़ी के काँटे जो भी समय बता रहे हैं वो हर दिन कम से कम दो बार तो सही होगा?
तो तुम्हारा हिसाब तो गड़बड़ा गया?
तुम कहोगे – हाँ, लेकिन दिन में दो बार सही समय बताने से क्या फायदा जब कि मुझे पता ही नहीं चल पाए कि असल में कितना समय हुआ है?
मान लो कि घड़ी के काँटे आठ बजे का समय दिखा रहे हैं तो हर बार आठ बजने पर घड़ी के काँटे सही समय बता रहे होंगे। है ना।
तुम्हारा जवाब होगा, हाँ, बिलकुल सही।
इस तरह तुम दो बार अपनी ही बात में उलझ गए।
वैसे तुम पूछ सकते हो कि मुझे पता कैसे चलेगा कि सही में आठ बज गया है क्योंकि मेरी घड़ी तो बन्द हैं ना? सब्र रखो। देखो, यह तो तुम्हें पता है कि जब भी आठ बजेगा तो तुम्हारी घड़ी सही समय बता रही होगी। तो बस यह करो कि अपनी नज़रें घड़ी पर जमाए रखो और जैसे ही आठ बजेगा तुम्हारी घड़ी सही होगी।
तुम कहोगे मगर.......... अब इस अगर-मगर में ज़्यादा मत पड़ो। जितना अगर-मगर करोगे उतना ही और उलझते जाओगे।
बेहतर होगा कि इस बात को यहीं खत्म कर दें।